

श्री ब्रज में रहण जी वाधाई

१२१

आयुमि श्री बृज धाम में, बाबलु बख्त बुलन्दु ।
 आजियां करे अबल जी, थियो गद् गद् गोकुलचन्दु ॥
 साराहे सनेह सां, साई अ जो सौभागु ।
 अची वसायुव वतन खे, करे अण गणियो अनुरागु ॥
 भली आयउ जीउ आयउ, मुहिंजा अङ्गण उज्यारा ।
 अखिड़ियुनि द्रियाइं ओताकड़ी, नैननि जा तारा ॥
 प्राणनि खां प्यारा लगनि, मूंखे सन्त त सोभारा ।
 गुणनि गुलज़ारा, रीझी रहो रस राज में ॥

१२२

बाबलु आयो बृज में, थी हर हंथि हरियाली ।
 वणनि बि वाधायूं दिनियूं, दिसी महबत जो माली ॥
 पखियुनि बि मधुर लाति सां, जै जै उचारी ।
 कोकिलाऊं पिय पिय चवनि, कनि मोर नृत्यकारी ॥

यमुना भी लहिरियुनि सां, साईअ गुण गाए ।

जड्डु चेतनु चाहे, ही राणो रहे हिन राज में ॥

० ० ० ० ०

बाबलु आयो बृजधाम में, थी भूमि बाग बहार ।

जिते जिते जानिबु घमें, थिए गुलनि जी गुलज़ार ॥

ठण्डिड़ी सुगन्धि समीर जी, हर हंथि आ हुब्रकार ।

बादल भी वर्षा करे, कनि साई अ जा सत्कार ॥

जहिं सूंह दिसी सरहो थियो सृष्टीअ सिरजण हारु ।

उहो अबलचन्द्र उदारु, जहिंजो सुजसु सुर नर भी चवनि ॥

१२३

बाबलु आयो बृज में, जागियो भूमीअ भागु ।

पालण लगी प्रीति सां, करे अमड़ि जियां अनुरागु ॥

मछरनि भी मोकल वठी, वजी ब्रियो वसायो मागु ।

सुका वण सावा थिया, पसी सन्त सुहागु ॥

नर नारियुनि अखड़ियूं ठरियूं, रूप माधुरी निहारे ।

कथा अँमृत प्यारे, साई सदा सत्संग में ॥

१२४

एको सत् सियारामु आ, ओंकार ट्रेई देव ।

जहिं ते कृपा सतिगुरनि जी, सो ज़ाणे इहो भेव ॥

जहिंजो नामु सदाई सत् आ, सत् आ लीलां धामु ।

जहिं रूपु सत् प्रभाउ सत्, सत् चेतनु अभिरामु ॥

जो कारणु सभु कार्यनि जो, सो कर्ता पुरखु सुजानु ।

सो निर्भय निर्वेरु सो, अकाल मूरति भगुवानु ॥

स्वतः सिद्ध प्रगटु धियो, अयोनि सम्भवु नाथु ।

जो अनन्त अनुराग सां, करे शरणि पयनि सनाथु ॥

सो आदि सचु जुगादि सचु, आहे बि सचु थींदो बि सचु ।

सतिगुरु नानक सचे चवे, सो हुओ बि सचु हूंदो बि सचु ॥

सोई सचु सन्त रूप सां, साई बणी आयो ।

सची रहिणी कहिणीअ सां, सचु मगु दर्शायो ॥

सचु बालिनि वरतणि बि सचु, सच सां लिंव लाती ।

सची कथा कलितार जी, थी प्रेम मगनु गाती ॥

सची संगति साई सचो, सची प्रीति कई ।

सची श्री सियाराम जी, महबत मोद मई ॥

सभई घड़ियूं सत्संग जूं, साहिब सचु कयूं ।

जहिं में वहनि अनुराग जूं, नदियूं नितु नयूं ॥

सदां सच जी मौज में, मस्तु रहे महिरबानु ।

भक्त वत्सलु भगुवानु, साई साहिबु सत्य सिन्धु ॥

० • ० • ० • ०

० गीतु ०

जागो जीवन धन मुहिंजा मिठिड़ा, जागो प्राण प्यारा ।

जागो साह जा साहिब सचिड़ा, जागो नैननि तारा ॥

जै जमुना जी चवंदा चवंदा, सन्त वजनि था स्नान ।

मन्दिरनि मंझि वजनि था मालिक, धिण्ड घडिड़याल नगारा ॥१॥

शोभा सागर रूप उजागर, रस रत्नाकर साईं ।

दर्शनु देई दिलिड़ी ठारियो, सत्संगति सींगारा ॥२॥

आनन्द कन्द अलबेलड़ा साईं, अवध धणियुनि अनुरागी ।

श्री मैगसिचन्द्र मनोहर मूरति, मन मोहन मनठारा ॥३॥

रस निधि राणा नेही निमाणा, शील सियाणा साईं ।

दीननि बन्धू दासनि वत्सल, दर्दली दिलि वारा ॥४॥

प्रेम भगति जो अखुटु खज़ानो, तोई खावन्द खोलियो ।

देई द्राणु दद्रनि खे दातर, अनन्त करीं उपकारा ॥५॥

सन्त शिरोमणि चतुर चूड़ामणि, गुणनिधि श्री गुरुदेवा ।

नाम जे रंगिड़े रंगी सभनि खे, राघव जा रिझवारा ॥६॥

जयड़ी मनाए जुगल जी जागियुमि, मालिकु मीरपुरि वारो ।

करे प्रणामु पृथ्वीअ खे प्रीतमु, धरणीअ ते पग धारा ॥७॥

हथु मुखु धोई मधुर कलेऊ, जुगल धणियुनि खे खारायो ।

पोइ प्रसादु प्रीति सां पातो, साईं साहिब सुकुमारा ॥८॥

१२५

घुमनि बृज जे धिटियुनि में, साईं अमड़ि सुखधाम ।

नई नई नन्दलाल जी, लीलां दिसनि ललाम ॥

कढ़हिं शाम निवास में, कढ़हिं यमुना तीर ।

कढ़हिं बाव±जाहु वणनि में, विहरे बाबलु वीरु ॥

रसिक सन्त दर्शननि जी, अन्दर में अभिलाष ।
 जिते बि कहिं सन्त जो .बुधनि, हलनि सहित हुलास ॥
 अजबु लिक लालन कई वसी वृन्दावन धाम ।
 सदाचारीअ गृहस्थीअ जियां, रहनि सुबुह शाम ॥
 श्री प्रिया वल्लभ जे मन्दिर जी, हिक प्रेम दासी माई ।
 जहिं ठाकुर चरणनि सां, सची लिव लाई ॥
 साहिबनि .बुधो सपन में, तहिं सां ठाकुरु गाल्हाए ।
 मगनु थी मन्दिर में, गीत मिठा गाए ॥
 तहिंजे दर्शन करण लाइ चित में चाह जगी ।
 उते हलियमि उकीर सां, जिते वेठी प्रेम पगी ॥
 रसीली वणिकरी में, जहिंजी कुटिया कुरिब भरी ।
 प्रणामु कयाऊँ प्यार सां, भेट रखे मिसिरी ॥
 श्री हित महाप्रभूअ जी, तहिं महिमा .बुधाई ।
 पद चौरासीअ जुगल जी, जहिं लीलां दर्शाई ॥
 श्रीजू बाल कलोल जूं, मिठियूं गाल्हियूं .बुधाए ।
 नई नई विन्दुर सां, साई अ विन्दुराए ॥
 सदां बाबा वृषभान घरि, आहे आनन्द उज्यारी ।
 श्रीजूअ लदाए लाढ़िड़ा, श्री कीरति महितारी ॥
 गोरांगी करे गोद में, गीत मिठा गाए ।
 सुनि सुन्दरता दिसी, भागिड़ो साराहे ॥
 बचिड़ी तुहिंजे जन्म सां, घर तीर्थु थियो मुहिंजो ।
 ऋषि मुनि अचनि घर में, मिठो नामु जपे तुहिंजो ॥

जिनि मोहु मिटायो मन जो, करे कठिनु तपस्याऊँ ।
 से बि आंसू वहाईनि प्रेम सां, तुहिंजूं गाए कथाऊँ ॥
 लाढ़ मूरति मूरति मुहिंजी लादिली, अलबेली सुकुमार ।
 तुहिंजी नूपर रुणि झुणि .बुधी, माउ थिए बलिहार ॥
 सब्राझा बालीमि बोलिड़ा, जणु सुधा वर्षाई ।
 पहिंजे लाढ़ विनोद सां, सभु सुजन हर्षाई ॥
 महाभाग मुहिंजा थिया, मिलीअ बचिड़ी सभागी ।
 अमां चयुइ माखे अतिलड़ी, कीरति जग जागी ॥
 देवर्षि नारद अची, तुहिंजी महिमा .बुधाई ।
 चयाई स्वामिणि गौलोक जी, तुहिंजे घरि आई ॥
 .बुधी अमड़ि जा बोलिड़ा, महिमा सांणु भरिया ।
 मधुरता जे मोद में, श्रीजू नेण ढरिया ॥
 चयाई अमड़ि खणी विया गुड़ियूं, दामलु चोराए ।
 दड़िको दे दादा खे, अमां सिघड़ो घुराए ॥
 तुहिंजे बल ते मायड़ी, मूं खे भायड़ो खिजाए ।
 अमड़ि मजी मुंहिजो अर्जिड़ो, चउ दामल समुझाए ॥
 गुलिड़नि जहिड़ियूं गुदिड़ियूं, दिएमि मायड़ी मोटाए ।
 विहाउं कंदसि गुदी गुदे जो, अजु महूर्त आहे ॥
 इऐं सब्राझा बोलिड़ा, चई स्वामिणि सुकुमारी ।
 वात्सल्य रस मगनु कई, मिठिड़ी महितारी ॥
 भिजाई भोरी बची, आंसुनि झर लाए ।
 ममत सां मस्तकु चुमीं, सुखिड़ो सरसाए ॥

विहारे लाल हिंडोलड़े, पहिंजी ब्रारिड़ी झुलाए ।
 गाए मिठी लोलिड़ी, मन सुरिति झुलाए ॥
 श्यामा मुहिंजी कुल मणी, चिरु जीवे माई ।
 मूरत लाढ़ विनोद जी, मूं अखड़ियुनि समाई ॥
 पिता पुण्यनि जो समुंडु आ, थाह न कहिं पाई ।
 मिठ ब्रोलिनि अँमृत श्रवनि, ब्रचिड़ी मूं ज़ाई ॥
 कंचन तनी पारस कनी, सभु सखियुनि मुकुटु मणी ।
 गोर वरणि शोभा धरणि, जसु गाए सहस फणी ॥
 मधुर घटा आनन्द जी, अडण वरिषाई ।
 चिरु जीवे मुंहिजी लादुली, हंस मुख हरिषाई ॥
 किरोड़ पुटनि खां प्यारड़ी, शपथ चवां सत् भांड ।
 सूरज कुल मण्डनि ब्रची, मैया ब्रलि ब्रलि जाइ ॥
 बृज स्वामिणि विनोदड़ा, .बुधी बाबल हर्षायो ।
 श्रीराधा अँमृत नाम जो, बादलु बरसायो ॥
 श्रीराधा राधा नाम जी, रट मिठिड़ी लाती ।
 श्यामु सुन्दरु जहिं .बुधण लाइ, पाए नितु ज्ञाती ॥
 महिमा श्रीराधा नाम जी, मिठे साहिब समुझाई ।
 संवल पहिंजे श्रीमुख सां, बाबल .बुधाई ॥
 रा शब्दु जहिं मुख .बुधां, तहिं द्रियां भगति भण्डारु ।
 पुठियां पुठियां फिरंदो वतां, करे धा अखर उचारु ॥
 इऐं चवे मुहिंजो चितड़ो, वजी ज़िभिड़ीअ मंझि विहां ।
 वेझो वेही विनोद सां, नाम जो लाभु लहां ॥

श्रीराधा नाम प्रसाद सां, मां थियुसि जगत जो नाथु ।
 श्रीराधा नाम प्रसाद सां, देव था नाईनि माथु ॥
 श्रीराधा नाम प्रसाद सां, सारे जग खे थो पालियां ।
 श्रीराधा नाम प्रसाद सां, पहिंजी साहिबी संभालियां ॥
 तोड़े पूरणु कामु मां, त बि नाम जो अभिलाषी ।
 श्रीराधा नाम प्रसाद सां, थियुसि अच्युत अविनाशी ॥
 मुकुटु श्रीराधा नाम जो, कुण्डल राधा नामु ।
 नैन अंजनु भाल तिलकु आ, श्रीराधा राधा नामु ॥
 श्रीराधा नाम जी कमली, श्रीराधा नाम जो हारु ।
 दिलि देरो श्रीराधा नाम जो, श्रीराधा नाम सींगारु ॥
 प्राण पोषकु राधा नामु आ, श्रीराधा नामु खानु पानु ।
 जपु तपु श्रीराधा नामु आ, राधा नामु ई तीर्थ स्नानु ॥
 साह में श्री राधा नाम जी, सुहिणी वजे सितार ।
 माणियां मौज अपार, श्रीराधा नाम प्रताप सां ॥

